NEHRU
BAL PUSTAKALAYA

तैयार रहो

उमा आनंद

अनुवाद
पृथ्वीराज मोंगा

ISBN 81-237-1000-9
पहला संस्करण : 1975
पहला संशोधित संस्करण : 1996
चौथी आवृत्ति : 2005 *(शक 1926)*
मूल © उमा आनंद, 1975
हिंदी अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1975
Be Prepared *(Hindi)*

रु. 14.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नेहरू बाल पुस्तकालय

तैयार रहो

उमा आनंद

चित्र
सत्यसेवक मुखर्जी

अनुवाद
पृथ्वीराज मोंगा

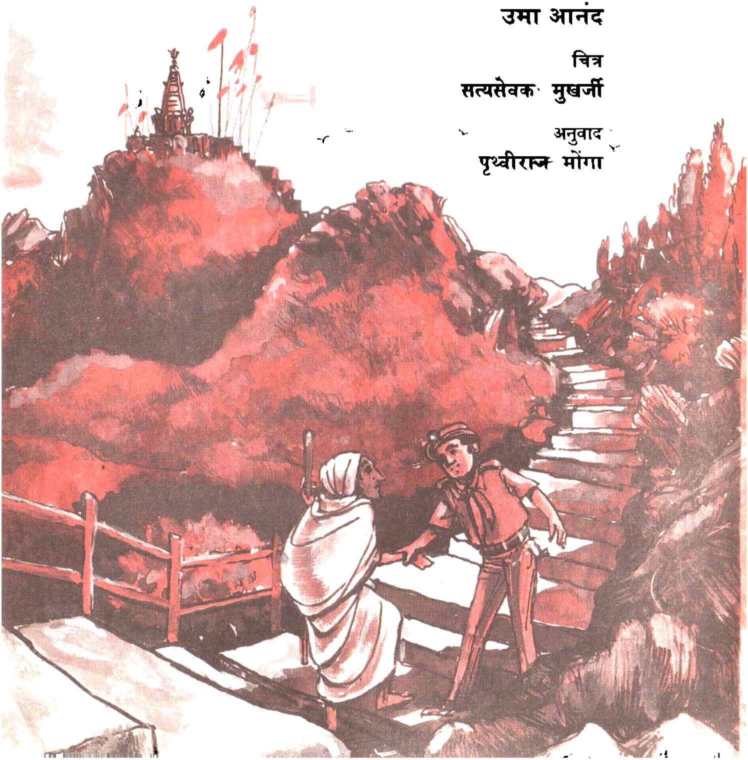

दो मित्र

एक घंटी जोर से बज उठी। इससे पहले कि वह आवाज बंद हो, कई दरवाजे धड़ाधड़ खुले और पिंजरे से छोड़ दिये गये पक्षियों की तरह हंसते-चहचहाते लड़के कमरों से बाहर निकलने लगे।

दो लड़के स्कूल की सीढ़ियों पर मिले और बातें करने लगे, "हैलो, नवीन! शुक्र मनाओ कि इम्तहान खत्म हो गये," उन दोनों में से लंबे वाले लड़के ने कहा। वह खुश दिखाई दे रहा था और उसके होंठों पर मुस्कान थी।

"हैलो, कपिल," नवीन ने उत्तर दिया। नवीन पीले और उदास चेहरे वाला एक दुबला-पतला लड़का था। वह बोला, "तुम तो इस बार भी छुट्टियों में कैंप पर जा रहे होगे?"

"न, इस साल नहीं। इस बार मैं अपने चाचा के पास जा रहा हूं जो शिमला के पास रहते हैं। बालचर शिक्षक ने भी इस बार दूसरे दो पैट्रोल्स चुने हैं। सबका नाम बारी-बारी से आता है न। मैं चाहता हूं कि हर समय पढ़ते रहने के बजाय तुम भी बालचर बन जाओ। इससे तुम्हारी सेहत भी अच्छी हो जायेगी। क्यों?"

"चाहता तो मैं भी यही हूं," नवीन ने कहा। "पर तुम जानते ही हो कि मेरे लिए यह बड़ा मुश्किल है। मुझे तो रोज शाम को पिताजी के साथ दुकान पर बैठना पड़ता है।"

कपिल ने आगे कुछ नहीं कहा। उसी शा" कपिल ने अपने पिताजी से पूछा, "अगर नवीन भी मेरे साथ तारा जाये तो क्या विजय चाचाजी को बुरा लगेगा।"

"तुम उन्हें एक पोस्टकार्ड क्यों नहीं डाल देते? पता चल जायेगा," कपूर जी ने सुझाया। कपिल ने पिताजी के कहे अनुसार चाचाजी को पत्र लिख दिया और उसी समय से उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

तीन दिन बाद कपिल को एक पोस्टकार्ड मिला। चाचाजी ने लिखा था :

प्रिय कपिल,

तुम्हारा मित्र खुशी से तुम्हारे साथ आये। वह भी तुम्हारे साथ रह लेगा। मेरा ख्याल है कि वह भी तुम्हारे जैसा ही एक अच्छा बालचर होगा। तुम दोनों यहां कैंप के लिए भी अभ्यास कर सकते हो। तुम्हारी चचेरी बहन रेखा भी अब पूरी गाईड बन गयी है। वह पाकशास्त्र के बैज के लिए अभ्यास कर रही है। कल रात उसने हमें जली हुई आलू की भाजी और धुआंयी हुई मटर का पुलाव खिलाया। वाह, कितना मजा आया। उसने हमें धमकी भी दी है कि अब वही हर रोज खाना बनायेगी। इसलिए 'तैयार रहो'।

तुम्हारी चाची की तरफ से तुम्हारी माताजी को नमस्ते। मेरी तरफ से भी माता-पिता को नमस्ते कहना। हम रविवार को तुम दोनों की प्रतीक्षा करेंगे।

सस्नेह,
तुम्हारा चाचा विजय कपूर

कपिल की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। "अच्छा हो, मैं अभी जाकर नवीन को बता आऊं," वह अपनी मां से बोला ।

करनाल बाजार के ठीक बीच में स्थित नवीन की दुकान पर कपिल जब भी जाता, उसे खूब मजा आता। दुकान में सदा ताजे अनाज और मीठे बिस्कुटों की महक फैली रहती। लोगों की भीड़ हमेशा वहां जमी होती। कुछ बाहर निकलते तो कुछ अंदर आ जाते।

नवीन आज दुकान पर अकेला ही था। नवीन ने कपिल को देखकर आश्चर्य से पूछा, "अरे! तुम यहां कैसे आ गये?"

"सुनो नवीन! मुझे अभी-अभी तुम्हारे लिए एक निमंत्रण मिला है।"

"मेरे लिए? कहां, किसके पास से?" नवीन ने फिर आश्चर्य से पूछा।

मैंने तुम्हें बताया था न कि मैं छुट्टियों में चाचाजी के पास जा रहा हूं। वे एक स्कूल में पी. टी. के अध्यापक और सहायक बालचर शिक्षक हैं।

यह जगह शिमला के बिल्कुल पास है। उन्होंने लिखा है कि मैं तुम्हें भी अपने साथ ला सकता हूं। वे समझते हैं कि तुम भी बालचर हो। क्या घरवाले तुम्हें जाने देंगे?"

"मेरे ख्याल से तो जाने देंगे। सच मजा आ गया, मैं भी यही चाहता था। मैं पहले कभी पहाड़ों पर नहीं गया," नवीन ने कहा। "ठहरो, मैं पिताजी को बुलाता हूं।"

वे दोनों हैरान रह गये जब उन्हें पता चला कि घरवाले उसे भेजने के लिए तैयार हैं। नवीन के पिताजी बोले, "हम खुद इसकी सेहत के बारे में चिंतित रहते हैं। मेरे विचार से वहां जाना नवीन की सेहत के लिए बहुत अच्छा रहेगा। तुम हमारी तरफ से अपने चाचाजी को धन्यवाद देना।"

"हम यहां से इतवार को सुबह छह बजे वाली बस से जायेंगे और दोपहर बारह बजे तक तारा पहुंच भी जायेंगे। बस स्टैंड से मेरे चाचाजी का काटेज एक फर्लांग दूर एक ऊंची पहाड़ी पर है। चाचीजी ने एक गाय रखी हुई है। सब्जियां भी घर के फार्म में होती हैं। देखता हूं नवीन कैसे मोटा नहीं होता!" कपिल ने मुस्कराते हुए कहा।

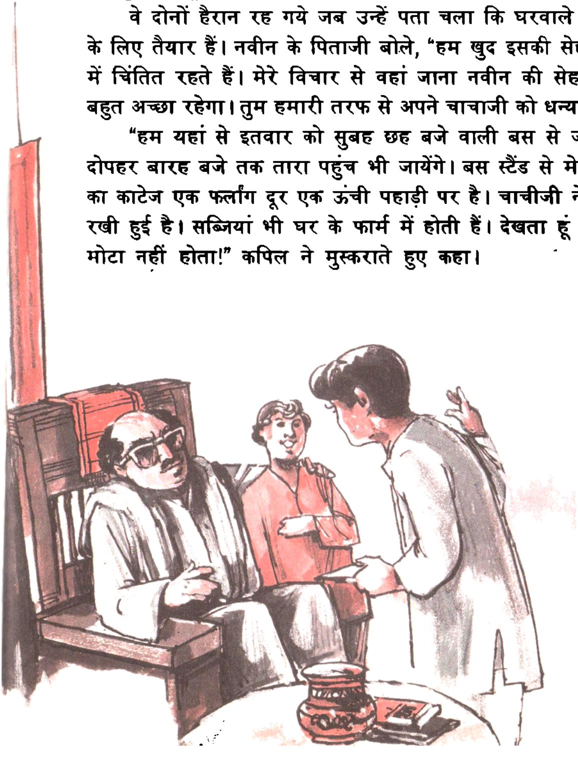

शावक और बालचर

रविवार को दोनों मित्र छह बजे से पहले बस स्टैंड पर मिले। कपिल के पास एक साफ झोला और एक छोटा सा सूटकेस था। नवीन बिना बंधे हुए कई बंडलों में सारा सामान लाया था।

"हे भगवान! तुम क्या-क्या उठा लाये हो अपने साथ?" बस में चढ़ने के बाद बंडलों को सीट के ऊपर-नीचे रखकर कपिल ने पूछा।

"मां ने भेज दिया है," नवीन ने पूरा जोर लगाकर एक टोकरी को खींचते हुए जवाब दिया। "मेरे कपड़े तो इस छोटे से ट्रंक में हैं। बाकी सब तुम्हारी चाचीजी के लिए है। यह टोकरी आमों की है और इस कनस्तर में बिस्कुट हैं। इस थैले में गुड़ और शक्कर है. . . "

कपिल ने हंसते हुए कहा, "चलो अच्छा है। वहां पहुंचते-पहुंचते तो हम सारा माल चट कर जायेंगे। फिर इन सबको ढोने की क्या चिंता!"

तभी कडंक्टर ने सीटी बजा दी। यात्री बस में चढ़ने लगे और कुछ ही क्षणों में बस अपने रास्ते पर थी। सीटों पर आराम से बैठ जाने पर नवीन ने कहा, "तुमने कहा था न कि तुम्हारे चाचाजी सोचते हैं कि मैं भी बालचर हूं। मैं डरता हूं कि मुझ से मिलकर वे निराश न हों। इसलिए मुझे यह तो बता ही दो कि यह बालचर आखिर होता क्या है?"

"मैं पिछले दो सालों से बालचर हूं। मैंने अपने स्काउट की दूसरी क्लास पास कर ली है जिसका मतलब यह हुआ कि मैं फर्स्ट-एड और संकेत देने जैसी चीजें थोड़ी-बहुत सीख गया हूं। लेकिन नवीन, बालचर बनने से पहले मैं भी एक शावक या 'कब' था।

"शावक? यह क्या होता है?"

"छोटे-छोटे बच्चों को शावक कहा जाता है। वे एक दल बनाते हैं। मैं जब सात साल का था तभी अपने स्कूल के दल में शामिल हो गया था और 12 साल का होते-होते मैं स्काउट बन गया। सच, जब मैं शावक था तो बड़ा मजा आता था। वैसे, लार्ड बेडन पावेल को शावकों का विचार एक भारतीय लड़के की कहानी से मिला था।

"ये लार्ड बेडन पावेल कौन थे। और वह कौन-सी कहानी है?"

"लार्ड बेडन पावेल एक अंग्रेज थे। उन्होंने 1907 में 'बालचर अभियान' शुरू किया था। उन्हें यह लगा कि हम जैसे लड़के जो भीड़ भरे शहरों में रहते

हैं, प्रकृति और पशु-पक्षियों के बारे में कुछ भी नहीं जानते। लगता है कि हम घने जंगल में खो गए हैं और अपने-आप को संभाल नहीं पा रहे हैं। वे चाहते थे कि बच्चे आजाद, बहादुर और आशावादी होना सीखें। उन्हें महसूस हुआ कि बच्चे अगर छोटी उम्र में ही यह सब सीख लें तो बड़े होने पर वे बहुत ही अच्छे नागरिक सिद्ध होंगे। आज संसार के बहुत से देशों मे बालचर हैं। बालचर अभियान अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे की तरह है।"

"यह कहानी भी एक अंग्रेज लेखक रडयार्ड किप्लिंग ने लिखी थी। वह कई वर्षों तक भारत में रहा था। उसने 'द जंगल बुक' नामक एक कहानी लिखी है। तुमने वह पढ़ी है क्या?"

"नहीं, पर पढ़ना जरूर चाहूंगा। इस कहानी में क्या है?"

"मुझे लगता है कि वह पुस्तक विजय चाचाजी के पास भी होगी। तुम वहीं उसे पढ़ना। यह कहानी गांव के एक लड़के मौगली के बारे में है जिसका पालन-पोषण भेड़ियों के एक परिवार ने किया था।"

"भला कैसे?"

"सुनो। मौगली को उसके मां-बाप एक दिन जंगल में लेकर गये। तब वह बिलकुल छोटा था। उन्होंने जंगल में कैंप लगाया हुआ था। एक बाघ शेरखान शिकार की खोज में भटक रहा था और जब उसने आग बुझी हुई देखी तो उसने उन पर हमला कर दिया। लेकिन गलती से बाघ बुझी हुई आग पर चल पड़ा। जब बाघ का एक पंजा अंगारों से जला तो वह दर्द से दहाड़ उठा। तभी मौगली के मां-बाप की नींद टूट गयी और 'अब वे क्या करें' की घबराहट में मौगली घुटनों के बल रेंगता बाहर निकला और जंगल में कहीं खो गया। एक मादा भेड़िया ने जब उसे घुटनों के बल धीरे-धीरे रेंगते देखा तो वह उसे उठाकर अपनी गुफा में ले गयी। वहां पहुंचते ही मौगली मादा भेड़िया के शावकों के साथ खेलने लगा। उन्हीं शावकों के साथ वह भी जवान हुआ और दल के साथ ही शिकार करना भी सीख गया। दूसरे पशु-पक्षियों की भाषा और संकेत भी वह सीख गया।"

"उसे ये सारी चीजें सिखायी किसने?"

"उसके दो मित्रों, समझदार भालू और चालाक तेंदूए भगीरा ने। अच्छा हो अगर तुम तारा पहुंचने पर यह पढ़ ही डालो।"

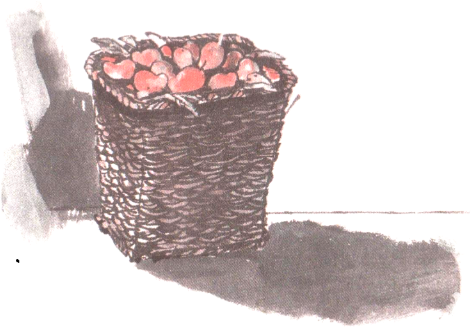

तैयार रहो

थोड़ी देर बाद, बस एक बाजार के बीच में रुक गयी।

"उचाणा," कंडक्टर ने कहा। तीन यात्री बस से उतरे और कंडक्टर ने सीटी बजा दी।

"रोको, रोको," एक बूढ़ा आदमी चिल्लाया।

ड्राइवर ने पीछे घूमकर देखते हुए कहा, "भाई, जरा जल्दी-जल्दी चढ़ जाइए।"

बूढ़ा आदमी बस में चढ़ा। उसके पीछे-पीछे एक मोटी औरत और एक छोटी-सी लड़की थी। वे भी बस में चढ़ गयीं। बस झटके के साथ चली तो छोटी लड़की लड़खड़ा कर गिर पड़ी। एक सीट के पैने किनारे के साथ टकराने से उसका घुटना छिल गया और वह जोर-जोर से रोने लगी।

"कंडक्टर! कंडक्टर!" बूढ़े व्यक्ति ने कहा। "बस रोक दो।"

"जी नहीं, बस नहीं रुकेगी," कंडक्टर ने उत्तर दिया। "आपको अगले स्टाप तक इंतजार करना पड़ेगा।"

छोटी लड़की और जोर से चिल्लाने लगी। "हाय। मेरी बच्ची!" उसकी मां बोली, "चोट से खून बह रहा है।"

"शायद मैं कुछ सहायता कर सकूं," कपिल ने अपनी सीट पर से झुकते हुए कहा। "नवीन, जरा मुझे झोला पकड़ा दो।"

कपिल ने झोला खोला ओर डिब्बे में से एक छोटी-सी शीशी निकाली। वह छोटी लड़की की मां से बोला, "मांजी, पहले मैं चोटवाली जगह को साफ करूंगा। शीशी में स्पिरिट है, थोड़ा तेज लगेगा। आप इसे एक मिनट के लिए पकड़े रहिए।"

कपिल ने जल्दी से थोड़ी-सी रुई निकाली और उस पर स्पिरिट डाल दी, फिर उसने सावधानी से चोट को साफ किया। छोटी लड़की चिल्लाना ही चाहती थी कि कपिल ने दूसरी शीशी निकाल ली जिसमें लाल रंग का तरल पदार्थ भरा हुआ था। "देखो," उसने जरा हंसते हुए कहा, "तुम्हारे घुटने पर भी मैं रंग लगाने जा रहा हूं—तुम्हारी फ्राक जैसा।" कहकर उसने लड़की के घुटने पर वह लाल रंग की दवा लगा दी।

"क्यों मुन्ना, तुम्हारे पास ये सब चीजें कैसे हैं। तुम्हारी आयु इतनी तो नहीं कि डाक्टरी पढ़ते हो. . ." उस बूढ़े व्यक्ति ने पूछा।

कपिल हंसा, "मैं अभी सिर्फ चौदह साल का हूं। पर मैं बालचर हूं और हमको सिखाया जाता है कि हमेशा 'तैयार रहो'। बस इसलिए मैं फर्स्ट-एड का सामान सदा अपने पास रखता हूं।"

"ओह! तुम बालचर हो। बहुत अच्छे, बहुत अच्छे। धन्यवाद।"

थोड़ी देर बाद बस रुक गयी। कंडक्टर फिर पुकार उठा, "कालका।"

वह बूढ़ा व्यक्ति, मोटी स्त्री और छोटी लड़की तीनों बस से उतर गये। कंडक्टर ने बाकी यात्रियों से कहा कि बस बीस मिनट रुकेगी। यात्री यदि चाहें तो कुछ खा-पी सकते हैं और आराम कर सकते हैं।

"नवीन! चलो आलू-पूरी खाते हैं।" कपिल ने कहा और दोनों बस से उतरकर थोड़ी दूरी पर स्थित दुकान की ओर चल पड़े।

तारा में फार्म

नवीन के लिए कालका से आगे की यात्रा एक सुखद आश्चर्य था। सड़क सीधी ऊंचाई की ओर जाती हुई एकदम से मुड़ जाती और हर मोड़ पर क्षितिज में नयी-नयी शृंखलाएं दिखायी देती थीं। पहाड़ों की चोटियां आकाश में मीनारों की तरह उठी हुई थीं। सूर्य काफी तेज चमक रहा था, लेकिन ठंडी हवा से वह थोड़ा ठिठुरने लगा। सामने, नीचे पहाड़ों पर छोटी-छोटी जड़ी-बूटियों और झाड़ियों की जगह, अब घने ऊंचे वृक्ष और अचानक आ गयी बहार दिखाई देने लगी थी।

"आह! कितना सुंदर जंगल है," उससे रहा न गया।

"इन ऊंचे-ऊंचे पेड़ों को देवदार कहते हैं। इनमें पत्तों की जगह कांटे होते हैं," कपिल ने बताया।

"और ये लाल फूल? ये गुलाब के फूल हैं क्या?"

कपिल हंस दिया, "अरे नहीं। ये सदाबहार मौलश्री के फूल हैं। मई के महीने में तो ये लाल फूल इतने ज्यादा होते हैं कि दूर से देखें तो लगता है कि जंगल में आग लगी हुई है। अब जून है न, इसीलिए यही थोड़े-से फूल बाकी बचे हैं।"

"मुझे लगता है कि तुमने बालचर अभियान में फूलों और पेड़ों के बारे में भी बहुत कुछ सीखा है," नवीन ने उसे थोड़ा छेड़ने के विचार से पूछा।

"हां, मैंने सीखा था और इसके लिए 'नेचर बैज' भी जीता था।" दोनों जोर से हंस पड़े। तभी कपिल ने कुछ कहा, "वह देखो, तारा! हम पहुंच गये हैं। वे बस स्टैंड पर जरूर हमारी राह देख रहे होंगे।"

और जैसे ही बस रुकी, एक ऊंची आवाज उन्हें सुनाई दी, "वह रहा।

SIMLA

कपिल भाई!" एक बारह वर्ष की लड़की ने दरवाजा खोला और बस में चढ़ आयी। उसकी दो चोटियां कमर के पास लहरा रही थीं और आंखों में चमक थी।

"अरे रेखा, तुम तो एकदम लंबी हो गयी हो।"

"तुम्हारे जितनी नहीं हुई हूं," वह खिलखिलायी। "वह टोकरी दो, मैं उठाती हूं।"

"यह नवीन है। ये सारे बंडल यह चाची के लिए लाया है। विजय चाचा कहां हैं?"

"मैं यहां हूं भाई," एक आवाज चहकी। "अब तुम दोनों बातें बंद करो और जल्दी से नीचे उतरो।"

जैसे ही अपने सारे बंडलों और बक्सों के साथ वे नीचे उतरे, बस शिमला की ओर चल दी

"कपिल," विजय चाचा ने उसके कंधे थपथपाते हुए कहा। "अब तो तुम बहुत बड़े नजर आने लगे हो। बिल्कुल मेरे जितने लंबे हो गये हो।"

"यह मेरा दोस्त नवीन है," कपिल ने कहा।

"निमंत्रण के लिए बहुत आभारी हूं," नवीन ने शर्माते हुए कहा।

"अरे, तुमने बहुत अच्छा किया जो आ गये।" विजय चाचा ने कहा।

"हां, कपिल! तुम्हारे इम्तहान कैसे हुए?"

"अच्छे हुए हैं। जरूर पास हो जाऊंगा, पर नवीन हमेशा की तरह इस बार भी प्रथम श्रेणी में पास होगा।"

जैसे ही वे टेढ़े-मेढ़े पहाड़ी रास्ते पर ऊपर की ओर बढ़े, सात-आठ वर्ष के दो बच्चे भागते हुए उनकी तरफ आने लगे।

"ये रामू और रानी हैं," रेखा हंसी। "अब ये अपनी आज की गुड डीड (अच्छा कार्य) करने के लिए जोर देंगे।"

"इसका क्या अर्थ है?" नवीन ने पूछा।

"क्या तुम बालचर नहीं हो?" विजय चाचा ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"नहीं, अभी तक नहीं," नवीन ने संकोच से उत्तर दिया।

रेखा बीच में बोल पड़ी, "राम शावक है और उसकी जुड़वां बहन रानी बुलबुल है। शावक और बुलबुल दोनों का यह कर्तव्य समझा जाता है कि दिन में कम-से-कम एक अच्छा काम जरूर करें। इसीलिए ये दोनों हर समय सहायता

करने के लिए तैयार रहते हैं। इनके पिता श्री राव, तारा रेलवे स्टेशन के इंचार्ज हैं।"

इस समय तक वे दोनों जुड़वां बच्चे, उनके पास तक ऊपर आ गये थे। "मुझे सहायता करने दो। एक बंडल मुझे दो विजय चाचा। ये ट्रंक मुझे दे दो, रेखा दीदी।" वे बराबर बोले जा रहे थे।

"ठहरो, एक मिनट ठहरो। तुम्हारे शिष्टाचार का क्या हुआ, रामू? पहले कपिल भाई को नमस्कार करो," विजय चाचा ने टोका। "और यह नवीन है—कपिल का मित्र।"

बच्चे कपिल और नवीन की ओर देखकर मुस्कराये। फिर कहा, "हमें सहायता करने दो न।"

"जरूर," कपिल ने कहा। "लो, तुम दोनों मिलकर यह थैला उठाओ। देखो, गिरा नहीं देना।"

सब चलते रहे।

"लो, हम पहुंच गये। तारा फार्म में तुम्हारा स्वागत है," विजय चाचा ने लाल सलाखोंवाले गेट को खोल दिया। बजरी बिछा रास्ता एक छोटे से घर तक जाता था जिसकी लाल छत ढालू थी। नवीन खुशी से चिल्ला पड़ा, "आह! यह तो परी के घर जैसा मालूम होता है।"

"जहां तिकोनी खिड़की से छत शुरू होती है, हमारा कमरा ठीक उसी के नीचे है।" कपिल ने ऊपरी हिस्से की ओर संकेत करते हुए कहा।

"हम यह थैला ऊपर ले जायें, चाचा?" रामू ने पूछा और दोनों हांफते हुए बरामदे में आ गये। आज का अच्छा कार्य निश्चय ही उनके लिए बहुत परिश्रम वाला था।

हरफनमौला

फार्म जाते समय दोनों जुड़वां बच्चे जिद करते रहे कि वे रास्ता दिखाते हुए जायेंगे। फार्म चाहे आकार में खास बड़ा नहीं था, पर मन को लुभाने वाली कई चीजे वहां थीं। घर के पीछे सब्जियों की क्यारियां थीं। इन क्यारियों के एक ओर मुर्गीखाना था। यह लकड़ी के चौखटे पर जाली लगाकर बनाया हुआ था। भीतर चौरस खानों के रूप में मुर्गियों के घर थे। फर्श पर लकड़ी के बुरादे की एक तह बिछी हुई थी।

"हमें भी अंडे इकट्ठा करने की आज्ञा मिल गयी है," जुड़वां बच्चों ने घोषणा की।

"मुर्गीखाने का दरवाजा हिलता है। मैंने पिताजी से कहा भी था, पर उन्हें इतने काम रहते हैं कि. . . भूल गये होंगे," रेखा ने कहा और जालीवाला दरवाजा खोल दिया।

कपिल ने कब्जों को देखकर कहा, "इसके लिए उन्हें परेशान मत करो। इसे मैं ही ठीक कर दूंगा। बस थोड़े से नये पेंच लाने पड़ेंगे। मेरे पास औजारों का बक्सा है।"

नवीन ने अपने मित्र की ओर प्रशंसा भरी नजरों से देखा। ऐसा कोई काम दिख ही नहीं रहा था जो कपिल न कर सकता हो। पूछने की आवश्यकता नहीं थी कि उसने बढ़ई का काम कहां से सीखा है। नवीन को पूरा विश्वास था कि यह काम भी बालचर प्रशिक्षण का एक भाग होगा।

"अरे, गाय कहां है?" कपिल ने मुर्गीखाने के पीछे खाली पड़े छप्पर की ओर हाथ का संकेत करके पूछा।

"वह बेचारी पिछली सर्दियों में मर गयी," रेखा ने उत्तर दिया। "लेकिन

हमें जसवंत की डेरी से काफी दूध और मक्खन मिल जाता है।"

"बहुत खूब! मैं बड़ा खुश हूं कि जसवंत भी यहीं है। वह बड़ा अच्छा बालचर है। हो सकता है कि वह नवीन को और मुझे भी एक-दो रात के

लिए कैंप पर ले जाय।"

"वह जरूर ले जायेगा। लेकिन अब हमें अंदर जाकर कुछ खाना चाहिए।" रेखा ने कहा और उसके आगे-आगे रसोई की ओर चल दी।

नवीन ने देखा कि रसोई में जहां स्टोव रखा था, उसके सामने एक ठिगनी-सी मेज पड़ी है और सामने लकड़ी की दीवार में बेंच जैसी एक परछत्ती बनी हुई है।

रेखा की मां ने सबके लिए खाना परोसा और सभी अपनी-अपनी थाली तथा लस्सी का गिलास उठाकर मेज की ओर चले गये। भरपेट खाने के बाद उसे यह देखकर भी बहुत आश्चर्य हुआ कि मां को बेकार के झंझट से बचाने के लिए सभी ने बारी-बारी से अपने बर्तन साफ कर दिये हैं। रेखा की मां द्वारा साफ करने के लिए केवल वही दो पतीले रह गये जिनमें खाना पकाया गया था। उसने इससे पहले कभी अपने बर्तन नहीं धोये थे। इसलिए पहले तो वह कपिल को यह सब करते देखता रहा, फिर उसने भी अपने बर्तनों को धोया और रेखा व कपिल की तरह सिंक के ऊपर रैक में रख दिया।

उसने कपिल की आंखों में देखा और बोला, "मैं सब कुछ बहुत जल्दी सीख जाऊंगा।"

"बिल्कुल, तुम जरूर सीख जाओगे," कपिल ने स्नेह से उसके कंधे के गिर्द बांह डालकर उसे अपने साथ सटा लिया। "आओ, पहले हम अपना सामान खोल लें। फिर मुर्गियों की जाली का दरवाजा ठीक करेंगे।"

स्काउट कैंप

"तुम्हारा यहां आज पहला दिन है, इसलिए आराम से रहो।" शाम को विजय चाचा ने कहा। "मेरे विचार में हम स्काउट कैंप तक घूम आयें तो अच्छा रहेगा। वहां इस वक्त बच्चे तो नहीं होंगे, क्योंकि इस महीने प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हां, यह सब नवीन को दिखा जरूर सकते हैं।"

विजय चाचा, रेखा और वे दोनों घने जंगल के बीच में बनी छायादार तंग सड़क पर ऊपर की ओर चलने लगे। थोड़ी देर बाद वे एक खुले मैदान में आ गये। नवीन इतनी बड़ी समतल जगह देखकर चकित रह गया। यह परेड के मैदान की तरह था। मैदान के एक किनारे पर बहुत-सी लकड़ी की झुग्गियां थीं।

"नवीन, हम अपने बालचर कैंप में यहीं आये थे," कपिल बोला। "आओ मैं तुम्हें खाने की जगह और दूसरी सब झोपड़ियां भी दिखाऊं।"

एक झोपड़ी में केवल लकड़ी के टेबल और स्टूल पड़े थे। सभी पर चटख रंग पुते हुए थे। किसी पर पीला, किसी पर नीला, किसी पर लाल, किसी पर हरा। बड़ा भला लग रहा था। सोने की झोपड़ी में रेलगाड़ी के 'थ्री-टायर' डिब्बे की ही तरह ऊपर-नीचे तीन-तीन फट्टे लगे हुए थे।

"यहां सब के साथ मिलकर रहना बड़ा अच्छा लगता होगा।" उसने कपिल से कहा।

"हां, मुझे यहां बड़ा मजा आता था। भारत के सभी स्थानों से आये कई लड़कों से मेरी दोस्ती हो गयी थी।"

तभी एक झोपड़ी के दरवाजे में दो छोटे गोल-मटोल चेहरे दिखाई दिए।

"हैलो, बच्चो!" कपिल बोला, "तुम कहां से टपक पड़े?"

"हम नवीन भाई को पो-वो का चक्कर दिखाना चाहते हैं," रामू ने कहा।

नवीन खिलखिलाकर हंसने लगा, "ये बो-वो चक्कर क्या है?"

बच्चों ने समझाया, "बो-वो नहीं, पो-वो।"

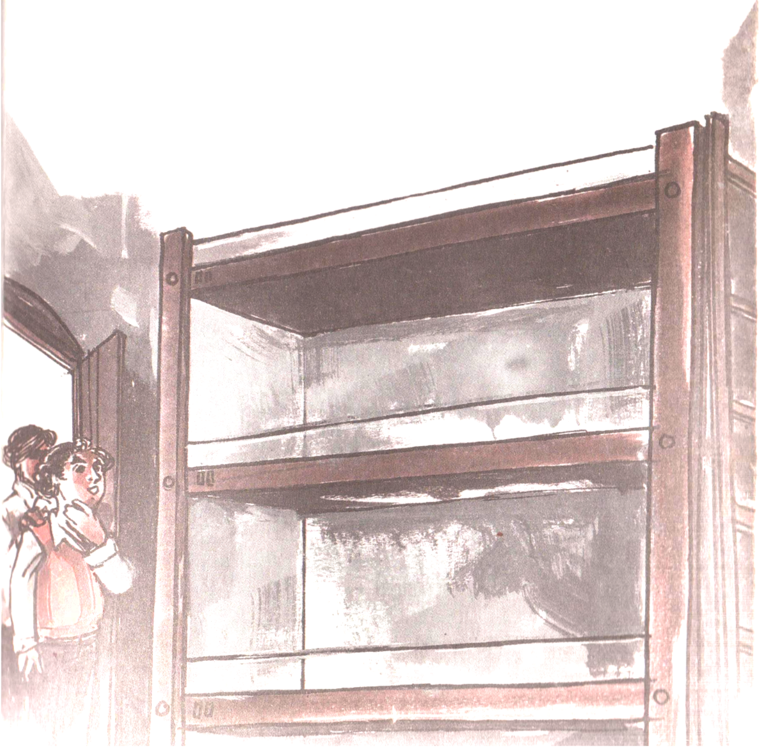

"पो-वो चक्कर में शावकों के दल अपने खेलों का प्रदर्शन करते है। यहां से केवल पचास गज की दूरी पर है।" चाचा मुस्कराये।

"मुझे वहां जरूर ले चलो, रामू," नवीन ने कहा।

वे फिर चलने लगे। दोनों जुड़वां बच्चे उछलते-कूदते आगे चल रहे थे।

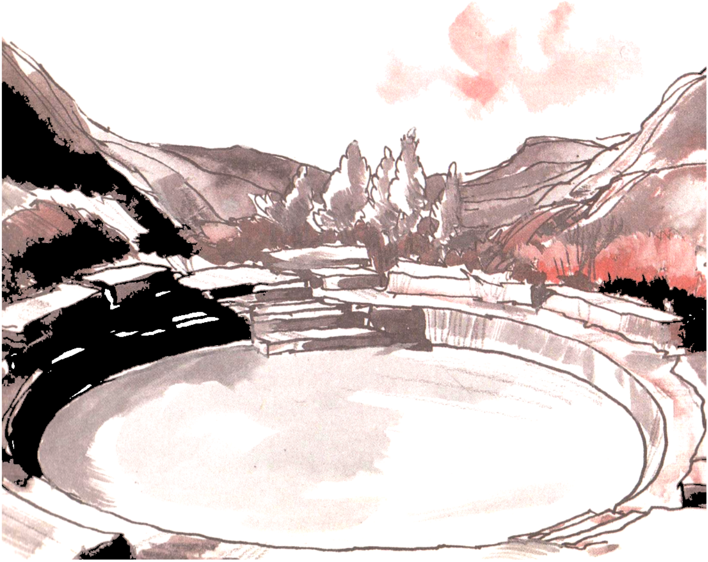

पहाड़ों को काटकर बनाया एक और खुला समतल मैदान आ गया। यह पहले मैदान से छोटा था और गोलाकार था। पहाड़ी से नीचे मैदान में उतरने के लिए खुरदरे पत्थरों की सीढ़ियां थीं।

"यह बिना छत वाले खुले थियेटर जैसा लगता है," नवीन ने कहा।

"एक तरह से यह थियेटर भी है," विजय चाचा ने बताना शुरू किया, "कैंप के आखिरी दिन लड़के आग जलाते हैं और उसकी रोशनी में नाचते-गाते हैं।"

"और अकेला यहां पो-वो सभा करता है।" रामू ने कहा, जैसे यह भी नवीन के लिए एक महत्वपूर्ण सूचना हो।

"यह 'अकेला' कौन है।" हर समय सीखने को तत्पर नवीन ने पूछा।

"चाचा, मेरा ख्याल है कि आप नवीन को 'द जंगल बुक' पढ़ने को दे दें। नहीं तो यह इसी तरह सवाल पूछता रहेगा।" कपिल ने कहा।

"जरूर, इसे वह पुस्तक जरूर पढ़नी चाहिए। विजय चाचा ने कहा, "द जंगल बुक में वुल्फ (भेड़िया) दल की तरह शावक दल के नेता को 'अकेला' कहा जाता है।"

सूर्य पहाड़ियों के पीछे छिप रहा था। बादलों का रंग सुनहरी से गुलाबी हो गया। थोड़ी देर बाद रंग बैंगनी हो गया और फिर धीरे-धीरे सारे रंग समाप्त हो गये। नवीन को लगा कि उसने जीवन में आज तक इतना सुंदर दृश्य कभी नहीं देखा।

"यह अद्‌भुत जगह है," उसने कहा।

"बहुत साल पहले एक बूढ़े आदमी ने यह सारी जगह ब्वाय स्काउट्स एसोसियेशन को भेंट में दी थी। तब उसने अवकाश ग्रहण कर लिया था और भारत से बाहर जा रहा था। उससे पहले कुछ भारतीय नेताओं ने एक शुद्ध स्वदेशी बालचर आंदोलन चलाया था। सन् 1947 में जब हम स्वतंत्र हुए, दो दल इकट्ठे हो गये और 'भारत स्काउट्स और गाइड' की नींव रखी। चलो, अब घर चलना चाहिए।"

झुटपुटा शीघ्र ही अंधेरे में बदल गया। "शिमला की बत्तियों को देखो,"

कपिल ने घर लौटते हुए कहा। पहाड़ पर हजारों बत्तियां जल रही थीं।

"अब ऊपर देखो," विजय चाचा बोले।

लाखों तारे नवीन के सिर पर लटकते प्रतीत हो रहे थे।

"ये कितने बड़े और चमकीले दिखते हैं। करनाल में तारे इतने बड़े नहीं होते," उसने भोलेपन में कहा।

चाचा ने कहा, "नवीन को ध्रुवतारा दिखाओ, कपिल। इसे यह भी सिखाओ कि ध्रुवतारे को कैसे खोजा जा सकता है।"

इस तरह नवीन ने अपने दोस्त से तारों भरी रात में ग्रेट बियर कांस्टैलेशन और ध्रुवतारे को दिशा-सूचक के रूप में इस्तेमाल करना सीख लिया।

उस रात जब नवीन सोने ही वाला था तो उसने नींद भरे स्वर में अपने मित्र से कहा, "मैं बड़ा खुश हूं कि मैं यहां आया।"

"मुझे खुशी है कि तुम्हें यहां आनंद आ रहा है। अब मजे से सो जाओ। मैंने चाची से कहा है कि सुबह हम दोनों सबसे पहले मुर्गीखाना साफ करेंगे।"

दूतकार्य

"खट, खट।"

नवीन की नींद टूट गयी।

"खट, खट, खट।"

"कपिल, कोई दरवाजा खटखटा रहा है", उसने कहा और मित्र के बिस्तर की ओर देखा। लेकिन कपिल का बिस्तर खाली था और उसके बिस्तर के कपड़े हवा में लटके हुए थे। नवीन बिस्तर से कूदा और कपड़ों को उसी तरह लटका दिया।

कपिल तैयार होकर अंदर आया, "नींद अच्छी आयी न?" उसने पूछा।

"खट, खट, खट, खट।"

"सुनो कपिल, यह किसकी आवाज है?"

"यह जरूर कठफोड़वा की आवाज है। यह घर के पीछे वाले बूढ़े बरगद पर रहता है। जल्दी तैयार हो जाओ तो हम मुर्गीखाना जाते हुए उसे देख सकते हैं।"

और कुछ ही मिनटों के बाद वे दोनों एक घने वृक्ष के नीचे खड़े थे। "कहां है?" नवीन ने पूछा।

"शू. . . ! शोर न मचाओ, नहीं तो वह उड़ जायेगा, " कपिल ने चेतावनी दी।

"खट, खट, खट, खट।"

"देखो, वहां है," कपिल हाथ से संकेत करते हुए फुसफुसाया।

नवीन ध्यान से देखने लगा। कठफोड़वा अभी भी कुरेद रहा था, "खट, खट।" नवीन ने काले सफेद रंग के चितकबरे पक्षी को अब देखा। उसका सिर चटख लाल रंग का था। वह अपनी नुकीली चोंच से वृक्ष के तने को कुरेद रहा था। "यह क्या कर रहा है?" उसने पूछा।

"पेड़ की छाल में जो सुंडियां होती हैं न, उन्हीं को ढूंढ़ रहा है।"

"यह इस तरह ऊपर कैसे चढ़ लेता है?" इस छोटे से मजेदार पक्षी को देखने में नवीन को मजा आ रहा था।

"पूंछ जैसे अपने पीछे वाले पंखों के सहारे ऊपर चढ़ता है, समझे? पर अब जल्दी चलो।"

गाय के तबेले में से कपिल लाल पहियों वाला ठेला और लंबे दस्ते वाला एक झाड़ू ले आया। "तुम ठेले को पकड़ो," उसने कहा। "और मैं झाड़ू से सारा बुरादा दरवाजे की ओर बुहारता हूं। यह सारा कूड़ा हम बाग के गड्ढे में डाल देंगे। यहां फर्श पर फिर नया बुरादा बिछायेंगे।"

और वे व्यस्त हो गये। थोड़ी देर बाद चाची मुर्गीदाने वाली टोकरी लेकर आयीं।

"भगवान तुम दोनों का भला करे।" चाची ने दाना डाला और को ...को. . .को का स्वर निकालते हुए मुर्गियों को बुलाने लगीं।

अपने खानों से निकलकर गिरती-पड़ती मुर्गियां दाने के लिए भागी आ गयीं। तब तक कपिल ने पानी वाले कसोरे खाली कर दिये और नवीन उनमें ताजा पानी डालने लगा।

"कपिल!" विजय चाचा बोले, "मेरा एक काम करोगे?"

"क्यों नहीं, चाचा?"

"मुझे किसी काम से शिमला जाना है। लेकिन मैंने व्यास जी से वादा किया था कि मैं उन्हें हर हफ्ते भेजी जाने वाली तरकारी उनके पास भेड़ फार्म में पहुंचा दूंगा। यदि तुम और नवीन दोनों जाकर उन्हें तरकारी पहुंचा दो तो, बड़ा अच्छा हो।"

"अरे चाचा हम जरूर पहुंचा देंगे। मैं तो पहले ही ऊपरवाली पहाड़ियों में नवीन को ले जाने वाला था। बालचर कैंप से थोड़ी दूर पर ही तो भेड़ों का फार्म है।" उसने अपने मित्र को बताया।

चलने से पहले कपिल ने खाने का डिब्बा और पानी की बोतल झोले में रख ली। नवीन ने देखा कि कपिल ने झोले में एक छोटा-सा चाकू और लिखने के लिए कापी भी रख ली है। दोनों ने तरकारी का एक-एक झोला उठाया और चल पड़े। पूरे दो घंटे बाद वे भेड़ फार्म पहुंच गये।

"देखो, व्यास जी वहां खड़े हैं," कपिल ने कहा और एक छरहरे बदन के व्यक्ति की ओर बढ़ा जो बगल में बैठी भेड़ को देख रहा था।

"मेरे चाचा ने आपके लिए तरकारी भेजी है," कपिल ने कहा।

"धन्यवाद। इस बेचारी भेड़ के पैर में चोट लग गयी है।" व्यास जी ने कहा।

"इस समय आप काफी व्यस्त हैं, हमें चलना चाहिए।" कपिल ने कहा और थैलों को उठाकर स्टोर में रख दिया।

खो जाना, मिल जाना

चलने के कारण उन्हें भूख लग गयी। कपिल ने बैठने के लिए एक अच्छी-सी जगह चुनी और दोनों ने बैठकर खाना खाया। खाना खा चुकने के बाद कपिल बोला, "हम 'ट्रेक द हंटर' खेल खेलें?"

"वह कैसे खेलते हैं?" नवीन ने पूछा।

"तुम जाओ और जंगल में कहीं छुप जाओ। छुपने के लिए मैं तुम्हें पांच मिनट दूंगा। फिर मैं तुम्हारे छोड़े गए निशानों के सहारे तुम्हें खोजना शुरू करूंगा।"

"जो मैं ऐसा कोई चिह्न ही न छोड़ूं?" नवीन ने कहा।

"यह तो तुम सोचते हो न!" कपिल ने उत्तर दिया। "पर एक बालचर को यह प्रशिक्षण दिया जाता है कि वह छोटे-छोटे चिह्नों को भी देख ले। जब मैं तुम्हें खोज लूंगा, तब बताऊंगा कि मैं तुम तक कैसे पहुंचा।"

नवीन चला गया। उसने देखा कि एक पहाड़ी के किनारे पर चट्टानें बाहर निकली हुई हैं। वह घनी झाड़ियों में से होता हुआ उसी ओर बढ़ने लगा। वहां पहुंचकर वह चट्टानों के अंदर घुसा और रेंग कर नीचे छुप गया।

कपिल ने बड़ी मुश्किल से इंतजार के पांच मिनट पूरे किये और नवीन को खोजने के लिए तैयार हो गया। जब झाड़ियों के ऊपर से एक चेहरा प्रकट हुआ तो नवीन हैरान रह गया। कपिल हंस दिया, "पकड़ लिया न?"

"तुमने मुझे इतनी जल्दी कैसे खोज लिया?" चट्टानों से बाहर निकलकर नवीन ने उसी आश्चर्य से पूछा।

"आओ, मैं तुम्हें वे सब चिह्न दिखाता हूं जो तुम पीछे छोड़ आये हो। सबसे पहले पहाड़ी के पीछे जाते हुए जब तुम खांसे थे तो मुझे मालूम हो

गया कि तुम किस दिशा में जा रहे हो। दूसरे, तुम इस गीली मिट्टी पर अपने पांव के निशान छोड़ गये। तुम्हें सूखी जमीन पर चलना चाहिए था। और इन झाड़ियों को देखो, जहां से तुम गुजरे थे। कुछ टहनियां ऊपर-नीचे हो गयी हैं और कुछ टूट गयी हैं। साफ रास्ता बना हुआ नजर आता है।"

"हां, मैंने तो बहुत सारे चिह्न पीछे छोड़ दिये," नवीन ने कहा। "अब

तुम्हारी बारी है। पता नहीं मैं जासूसी कर पाऊंगा कि नहीं।"

नवीन कान लगाये चुपचाप खड़ा रहा। शायद ऐसी कोई आवाज सुनाई दे जाय जिससे कपिल के छुपने वाली दिशा मालूम हो सके। लेकिन उसे वायु की सांय-सांय के सिवा कुछ भी सुनाई न दिया। पांच मिनट पूरे हो गये, लेकिन वह चकराया-सा खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद जिस दिशा में वह गया था, उसकी विपरीत दिशा में चलने लगा। उसने टूटी हुई झाड़ियां या पदचिह्न देखने का प्रयत्न किया, लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

अचानक पास की झाड़ियां थोड़ा हिलीं। वह कांप गया। सांप तो नहीं? तब उसने कराहट जैसी हल्की-सी आवाज सुनी।

अगले ही क्षण, खेल के बारे में सब कुछ भूलकर नवीन पूरा जोर लगाकर चीखा, "कपिल, कपिल, कपिल।"

एकाएक आई इस चीख से कपिल सतर्क हो गया। कपिल, छोटे कद वाले चीड़ के झुरमुट के पीछे छुपा हुआ था। यह जगह वहां से मुश्किल से दस गज दूर होगी जहां से नवीन उसे खोजने के लिए चला था। कपिल वहां से निकला और उसी दिशा में भागने लगा जिस ओर से चीख सुनाई दी थी। वह सोच रहा था, इस शहरी नौसिखिये को पता नहीं क्या हो गया।

वह पहुंचा तो नवीन दो चट्टानों के बीच पेट के बल लेटा झाड़ियों में किसी चीज को देख रहा था।

"तुम ठीक तो हो नवीन?" उसने हांफते हुए पूछा।

"यहां आओ कपिल। मैं तो इस चीज को छू नहीं सकता। ध्यान से सुनो।"

कपिल को एक कराहट सुनाई दी। वह घुटनों के बल बैठकर देखने लगा। एक छोटा-सा पिल्ला था जो डर, पीड़ा और थकान से अधमरा होकर झाड़ी के नीचे ऐन खाई में पड़ा था और उसका पंजा किसी फंदे में फंसा हुआ था।

"हाय! बेचारा कितना छोटा है। थोड़ा रुको नवीन। मैं फंदे को हटाता हूं। मुझे यह सब मालूम है। खरगोश पकड़ने के लिए कमीने शिकारी इन्हें इसी तरह बांध देते हैं।"

पिल्ला क्षीण स्वर में चिल्लाया। दोनों लड़कों ने किसी तरह फंदे सहित पिल्ले को खाई में से निकाल लिया। कपिल को फंदे की गांठ समझ में आ गयी और उसने पिल्ले का नन्हा-सा पंजा फंदे से छुड़ा लिया। पंजा शिथिल-सा उसके हाथ में लटकने लगा।

"मेरे ख्याल से इसका पंजा टूट गया है। पर अभी वह बच्चा है, हड्डी जरूर जुड़ जायेगी। पता नहीं कितने दिन से यहां बंधा पड़ा है। देखो, कितना दुबला हो गया है। भूखा-प्यासा जो है बेचारा।"

"किंतनी क्रूर चीज है यह।" कहते हुए नवीन ने फंदे को दूर फेंका। "फंदे को न फेंको नवीन, हमें इसकी रिपोर्ट करनी है। अच्छा हो, हम जल्दी से इसे घर ले चलें," कपिल बोला।

दोनों तेज-तेज चलने लगे। कपिल ने पिल्ले को बड़ी कोमलता से उठाया हुआ था ताकि उसके जख्मी पंजे पर चोट न लगे।

छोटा भालू

वे दोनों भी ठीक उसी समय घर पहुंचे जब विजय चाचा गेट के अंदर जा रहे थे।

"क्या है तुम्हारे पास?" उन्होंने पूछा।

दोनों ने सारी कहानी सुनायी। उन्होंने नवीन से फंदा ले लिया। "बहुत गंदी बात है। मैं इस फंदे को थाने ले जाता हूं और रिपोर्ट लिखवाता हूं। तुम्हारी चाची इसके पंजे पर पट्टी बांधने में तुम्हारी सहायता करेंगी।"

चाची पिल्ले के पंजे पर पट्टी बांध रही थीं, तभी रेखा अंदर आयी। नवीन ने उसे भी सारी कहानी सुना दी। रेखा उस नन्हे से पिल्ले के लिए प्यार से भर उठी। "हम इसे अपने पास रख सकते हैं? बोलो, रख लें? जब से भालू मरा, हमारे पास कोई कुत्ता भी नहीं है। यह है भी बिल्कुल हमारे भालू जैसा— रंग भूरा और थूथनी काली। हम इसका नाम छोटा भालू रख देते हैं।"

"पहले तो हमें यह देखना है कि यह जिंदा भी रहता है या नहीं। यह कई दिनों से भूखा है और बहुत कमजोर हो गया है।"

"इसकी देखभाल मैं करूंगी," लड़की ने उत्सुकता से कहा। "ठहरो, मुझे इसके लिए गर्म बिस्तर तैयार करने दो। क्या तुम मेरी मदद करोगे?"

वह नवीन को लेकर शेड की तरफ गयी। वहां उन्हें एक खाली टोकरी मिल गयी। नवीन ने उस टोकरी को साफ किया और रेखा ने पहले उसमें घास बिछाया, फिर उस पर कुछ नर्म चियड़े डाल दिये। पिल्ले को टोकरी मे बिठा दिया गया।

तभी रामू और रानी अंदर आये। रानी के हाथ में स्क्रेप बुक थी। "मैं तुम्हें दिखाने के लिए अपने जंगली फूलों का अलबम लायी हूं," उसने कपिल से कहा।

"पहले तुम देखो कि हम तुम्हारे लिए क्या लाये हैं?" उसने दोनों को पिल्ला दिखाते हुए उत्तर दिया।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि हम इसे दूध कैसे पिलायेंगे। यह इतना कमजोर है कि बर्तन में से अपने आप पी नहीं सकता और बोतल हमारे यहां कोई है नहीं।" चाची ने कहा।

"मेरी गुड़िया की नन्ही वाली बोतल से काम चल जायेगा?" रानी ने पूछा।

"बहुत अच्छे!" कपिल खुशी से बोल उठा। जुड़वां बच्चे बोतल लेने के लिए दौड़ पड़े। बोतल पिल्ले के लिए बिलकुल ठीक निकली और रेखा ने पिल्ले को चुसनी से दूध पीना सिखा दिया।

"तुम्हें पता है नवीन, आज तुमने बालचर का एक और इम्तहान पास पर लिया," कपिल ने अपने मित्र से कहा।

"वह कैसे?" नवीन ने हैरान हो कर पूछा।

"एक बालचर पशु-पक्षियों का भी मित्र होता है," कपिल ने बताया।

"शावक भी तो सबके मित्र होते हैं, कपिल भाई," रामू ने टोका।

"बुलबुल और गाइड्स भी," रानी भी चहकी। वह भला क्यों पीछे रहती।

"इस बीच पिल्ले की भूख और पीड़ा शांत हो गयीं और वह टोकरी में सिकुड़ गया और जल्दी ही उसे गहरी नींद आ गयी।

रात का एलार्म

दिन भर की सभी घटनाएं इतनी अधिक उत्तेजक रहीं कि अब नवीन को नींद नहीं आ रही थी। इसलिए उसने 'द जंगल बुक' पढ़नी शुरू कर दी। जब कपिल सो गया तो उसे बत्ती जलाये रखना अच्छा नहीं लगा। वह बत्ती बुझाकर खिड़की के पास जा खड़ा हुआ और कपिल के बताये अनुसार तारों की पहचान करने लगा।

दूर कहीं सियार की एक 'हुआंक' गूंजी और खामोश रात होने के कारण वह आवाज बहुत दूर तक चली गयी। तभी नवीन की दृष्टि टेढ़े-मेढ़े धुएं पर पड़ी जो बालचर कैंप के नीचे वाली झाड़ियों से ऊपर उठ रहा था।

तभी उसने ऊपर उठती बहुत-सी चिंगारियां देखीं। वे वापस नीचे ऐसे आतीं जैसे बहुत से तारे आसमान से टूट कर गिर रहे हों। अब दूसरी झाड़ी जली; आग की लपटें फिर ऊंची उठने लगीं। सियार दुबारा से हुआंका।

नवीन बैचेन हो गया। क्या यह भी वैसी ही कोई भयानक जंगल की आग है जिसके बारे में कपिल ने बताया था? क्या वह अपने मित्र को जगा दे? या, क्या वह बिना बात के उल्लू बन रहा है?

बाद में पछताने के बजाय उसने कपिल के कंधे को धीरे से हिलाया और फुसफुसा दिया, "कपिल, कपिल ज़रा जागो।"

"क्या बात है?" कपिल ने नींद भरी आवाज में पूछा।

"पता नहीं। लगता है कि जंगल में आग लग गयी है," नवीन ने कहा।

कपिल झटपट बिस्तर से कूदा और बाहर देखने लगा। "हां, लगता है कि जंगल में आग लग गयी है। कोई गर्म कपड़ा पहन लो। टार्च कहां गयी? जल्दी से नीचे आ जाओ, तब तक मैं चाचा को जगाता हूं।" यह सब कहते

हुए। कपिल ने पूरी बाजू का स्वैटर पहना, अपनी टार्च उठायी, बूट पहने और फिर नीचे दौड़ गया।

थोड़ी देर बाद नवीन भी नीचे उतर आया। विजय चाचा जाग गये थे।

"आओ बच्चो," विजय चाचा ने कहा।

तभी दूर कहीं एक घंटे के बजने की आवाज सुनायी दी। फिर पहाड़ियों के पार लगातार रात को चेतावनी (नाइट एलार्म) देने वाले खतरे के संकेत सुनायी देने लगे।

वे जैसे ही दौड़ कर रास्ते पर पहुंचे, और भी कई लोग उनके साथ शामिल हो गये। कुछ एक के पास टार्च और बालटियां थीं।

जब वे उस स्थान पर पहुंचे तब तक आग बहुत फैल चुकी थी। नवीन ने देखा कि बहुत से लोगों ने एक पंक्ति बना ली है और बालटियां एक से दूसरें के पास से होती हुई बहुत तेजी से आगे बढ़ रही हैं। सफेद बालोंवाला एक बूढ़ा आदमी इस काम की निगरानी कर रहा था। विजय चाचा, कपिल और नवीन भी बालटियां आगे पहुंचाने वाली पंक्ति में लग गये। पानी वहां तक नहीं पहुंचाया जा सकता था जहां आग लगी हुई थी।

इस बार उस बूढ़े आदमी के स्वर में जैसे ललकार थी, "अब हमें भी आग पर जवाबी हमला कर देना होगा। जसवंत, तुम स्वयं-सेवकों को बुलाओ।"

"हम आ रहे हैं," एक दृढ़ एवं उत्साही स्वर ने जवाब दिया ।

नवीन ने देखा कि ऊंचे कद का एक सिख लड़का दो-तीन दूसरे लड़कों के साथ आगे बढ़ा। फिर वे पहाड़ी की ओर दौड़े और नीचे से ऊपर की ओर उगी झाड़ियों को आग लगाने लगे। नवीन चकित रह गया, "कपिल, ये क्या कर रहे हैं?"

"अब ये दोनों आग वहां ऊपर वृक्षों की पंक्ति के थोड़ा नीचे मिल जायेंगी। आग दूसरी आग को मारती है। वह मेरा मित्र जसवंत है।"

जिस ओर से आग की लपटें कुछ कम उठ रहीं थीं, उसी ओर से व्यक्तियों की पंक्ति भी झाड़ियों को छड़ियों से पीटते हुए आग के साथ-साथ ऊपर की ओर बढ़ रही थी। लोगों ने उन बुझती हुई झाड़ियों पर पानी डाल दिया ताकि फिर से आग भड़कने की कोई आशंका न रहे।

दोनों ओर से तेजी से बढ़ती आग एक बिंदु पर मिली और थोड़ी देर तक भड़कने के बाद शीघ्र ही समाप्त होने लगी। यह बात भी नवीन को चकित कर गयी।

"रेत डालने के लिए कुछ और आदमी चाहिए," जसवंत ने पुकारा।

"चलो, नवीन," कपिल ने कहा और दोनों भागकर जसवंत के पास पहुंचे। दोनों प्रसन्न थे कि उन्हें भी काम करने का अवसर मिला।

"अरे कपिल, कैसे हो?" जसवंत ने कहा। "मुझे पता चला था कि तुम यहां हो। देखो, मिले भी तो कैसे। यह बातें करने का समय नहीं। जहां चाहिए, वहां रेत डालते चलो।"

परेड के मैदान के एक छोर पर रेत की खदान थी। सभी मित्रों ने तेजी

से आग पर रेत डालनी शुरू की। थोड़ी देर बाद विजय चाचा लड़कों के पास ऊपर आये, "हमने थोड़ा-बहुत कर दिया है। अब शिमला से आग बुझानेवाली मोटर आ गयी है। जसवंत, तुम भी हमारे साथ चलकर एक प्याला गर्म-गर्म चाय क्यों नहीं पीते? काम खत्म करने के बाद की चाय।"

सब थक गये थे, लेकिन एक अच्छा कार्य कर लेने की खुशी सभी के दिलों में थी। वे सब फार्म की ओर चलने लगे। जब मगों से सबने गर्म-गर्म चाय के कुछ एक घूंट बड़ी उत्सुकता से पी लिये तो कपिल ने कहा, "भाई जसवंत, मैं सोच रहा था कि तुम हमें भी कुछ रातों के लिए 'शैफर्ड हट' कैंप ले चलोगे।"

"उसमें तो सच में बड़ा मजा आता," जसवंत बोला। "लेकिन मैं तो कल पशु-मेले में सेवा के लिए चांदपुर बालचर दल के साथ जा रहा हूं। वहां स्वयं-सेवकों की कमी है। तुम भी मेरे साथ क्यों नहीं चलते कपिल?"

और यह निश्चित हो गया कि ये दोनों बालचर कल सुबह स्वयं-सेवकों की गश्त में साथ जायेंगे।

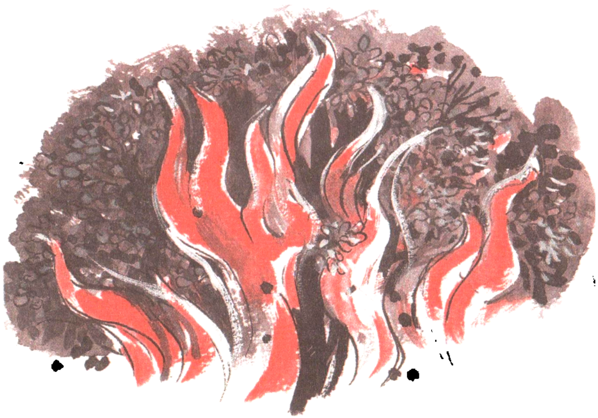

चांदपुर का मेला

चांदपुर गांव तारा से लगभग पचास मील नीचे कालका मुख्य रोड से थोड़ा एक ओर को हट कर बसा हुआ था। यहां हर वर्ष तीन दिन का मेला लगता था। चंडीदेवी का एक छोटा मंदिर एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर बना हुआ था। मंदिर के सामने पानी का एक तालाब था। आसपास की पहाड़ियों में बसे अनेक गांवों से किसान यहां पशुओं के क्रय-विक्रय और देवी की पूजा के लिए आते थे।

अगली सुबह जसवंत और कपिल शिमला बालचर दल में शामिल हो गये और एक बस उन्हें चांदपुर की ओर ले चली।

चांदपुर में मंदिर से थोड़ा नीचे मैदान में पशुओं और लोगों की काफी भीड़ जमा हो चुकी थी। बालचरों में शीघ्र ही कार्य बांट दिये गये। जसवंत बाड़ का अहाता बनाने वाले दल में था जहां कि सब पशुओं को रखा जा सके। कपिल को चिकित्सा-स्थल पर लगाया गया था जहां डाक्टर बच्चों को टीके लगा रहा था और अन्य अस्वस्थ व्यक्तियों को भी दवाई दे रहा था। कपिल ने देखा कि टीका लगवाने वाले बच्चे तो काफी साहसी हैं, लेकिन उन बच्चों की माताएं बहुत भयभीत थीं कि डाक्टर बाबू उनके बच्चों को कोई हानि तो नहीं पहुंचायेंगे।

मेले में बहुत से बूढ़े लोग भी आये हुए थे। वे सभी चंडीदेवी की पूजा के लिए आये थे। कपिल जब वापस बालचर कैंप आ रहा था तो उसने एक बूढ़ी स्त्री को देखा, जो देवी के दर्शनों को जाने के लिए चढ़ाई नहीं चढ़ पा रही थी। वह चिकित्सा-स्थल पर सारा दिन दौड़-धूप करने के कारण बहुत थका हुआ था। चाह रहा था कि कहीं से एक मग चाय का मिले। लेकिन उस

बूढ़ी स्त्री को देखकर उसे लगा कि सच में वह उसकी सहायता चाहती है।

"माताजी, थोड़ी मदद मैं करता हूं।"

"भगवान तेरा भला करे बेटा!" बूढ़ी स्त्री ने कांपते हुए स्वर में कहा और उसकी बांह का सहारा ले लिया।

मंदिर के सामनेवाले तालाब में बहुत-से लोग स्नान कर रहे थे। कपिल ने देखा कि वहां तालाब पर बालचर हरी तैनात है। वह हाथ का सहारा देकर एक वृद्ध आदमी को तालाब से बाहर निकलने में सहायता कर रहा था कि उसे चीखें सुनायी दीं। उसने देखा, एक छोटा-सा लड़का तालाब में गिर गया है।

पलक झपकते ही हरी ने चप्पल उतारी और पानी में कूद गया। छोटा लड़का एक बार पानी की सतह पर आया, फिर नीचे चला गया। हरी ने डुबकी लगायी और लड़के को पकड़ लिया। वह पीठ के बल उल्टा तैरता हुआ पानी की सतह पर आया। लड़के को उसने हाथों में उठाया हुआ था। कपिल भागकर तालाब की सीढ़ियों पर पहुंचा और जैसे ही हरी लड़के को लेकर किनारे पर आया, उसने घुटनों के बल नीचे बैठते हुए लड़के को अपने हाथों में थाम लिया। उसने लड़के को पेट के बल सूखी जगह पर लिटाया और उसकी पीठ को उसी ढंग से मलना शुरू किया जैसे उसने 'जीवन-बचाना' टेस्ट के दौरान सीखा था।

हरी के कपड़ों में से पानी टपक रहा था। उसने पूछा, "अब कैसा है?"

"अभी अच्छा हो जायेगा। पेट में ज्यादा पानी नहीं गया है," कपिल ने उत्तर दिया। बच्चा पहले हांफा, फिर मुंह से पानी बाहर निकालने लगा। फिर चिल्लाने लगा। "हरी, तुम पहले ये गीले कपड़े बदल डालो," कपिल बोला।

"मैं नीचे जाते हुए डाक्टर को भी कहता जाऊंगा," हरी ने कहा और घबराये हुए किसानों को पीछे हटाने लगा। "बच्चे को सांस तो लेने दीजिए। ज्यादा पास मत आइए।"

बच्चा अब ठीक होने लगा था। "यह किसका बच्चा है?" उसने भीड़ की ओर मुंह करके पूछा।

"यह मेरा भाई है, भाई साहब," चौदह-पंद्रह वर्ष के एक गडरिये ने कहा।

"तुम्हें बच्चे का ख्याल रखना चाहिए," कपिल ने गंभीर स्वर में कहा।

उसी समय कंबल और गर्म दूध लेकर डाक्टर भी आ गये, "आज तुम दो बालचरों ने सचमुच कमाल कर दिखाया है। बच्चा एकदम ठीक हो जायेगा।"

जसवंत स्काउट-टैट में कपिल इंतजार कर रहा था। "कपिल ने पूछा, "जसवंत, क्या कर रहे हो?"

"कुमार और मैं एक बछड़े को ढूंढ़ते रहे। ओफ! उस कमबख्त ने इतना दौड़ाया! आखिर हमने उसे घेर ही लिया," जसवंत ने हंसते हुए कहा।

"जब मै अंतर्राज्यीय खेलों के दौरान करनाल में ड्यूटी पर था, तब हमारे काम दूसरी तरह के हुआ करते थे," कपिल ने सोचते हुए कहा। "हम बस वूढ़े लोगों को सड़क पार करवा देते, या लोगों को सही बसों में चढ़ा देते, या गेट पर खड़े हो टिकटें देखते और उन्हें ठीक सीटों पर बिठा देते थे।'

"हां," जसवंत ने कहा। "शहर और गांव की समस्याओं में काफी अंतर होता है। मुझे तो ये लोग अच्छे लगते हैं। इनमें कितना अपनापन है। इनका जीवन कितना कठिन है, फिर भी देखो कितने खुश दिखाई देते हैं। सुनो, वे गा रहे हैं।"

मैदान के उस पार से एक लोकगीत के स्वर सुनायी दे रहे थे। कई जगहों पर आग जल रही थी, जिस पर स्त्रियां अपना सादा भोजन तैयार कर रही थीं।

"काश! नवीन भी हमारे साथ होता!" कपिल ने कहा।

"हम उसे 'शैफर्ड हट' पर कैंप में ले जायेंगे। अगले साल वह नियमित बालचर बन सकता है," जसवंत ने कहा और सोने के लिए दोनों टैंट में चले गये।

जब कपिल वहां नहीं था, उन दिनों में नवीन एक सप्ताह तक चलने वाले कैंप के अभियान में व्यस्त रहा।

हर प्रातः नाश्ता करने के बाद वह अपनी पीठ पर जरूरत की चीजों से भरा झोला लादकर चल पड़ता ताकि बोझ उठाने का अभ्यास हो जाये। झोले में एक जोड़ा कपड़े, सोने के लिए एक हल्के बोझ का किन्तु काफी गर्म बिस्तर, थोड़ा-सा खाने-पीने का सामान, सभी कुछ होता था। स्काउट टैस्ट में अपना खाना आप बनाना भी शामिल था।

कपिल और जसवंत शाम की चाय के समय तक वापस लौट आये। सारी शाम पशु-मेले के उत्तेजना भरे संस्मरण सुनाने और पिकनिक के लिए योजनाएं बनाने में बीत गयी।

पिकनिक

"खट, खट, खट, खट!"

शनिवार की प्रातः हो रही थी। कपिल और नवीन की नींद कठफोड़वे की आवाज से टूट गयी। वे झटपट बिस्तरों से कूदे और तैयार होना शुरू कर दिया।

"बच्चो, नीचे आओ भई," विजय चाचा ने पुकारा। "जसवंत भी आ गया है।"

जसवंत रसोईघर में छोटे भालू से खेल रहा था। उसने अपना झोला और किट अच्छी तरह तैयार किए हुए थे। साथ में पानी की एक बड़ी बोतल भी थी। नवीन ने देखा, कपिल के पास रस्सी और छोटे दस्तेवाली कुल्हाड़ी भी थी।

"बच्चो, एक लालटेन भी ले लो," विजय चाचा ने कहा। "देख लो, उसमें तेल तो है न!"

नवीन इस बात से काफी खुश था कि उसने पीठ पर झोला लादकर चलने का पहले से अभ्यास किया है। उसने अनुभव किया कि वह जसवंत और कपिल के साथ-साथ चल सकता है।

"नवीन, तुम्हें मालूम है कि आग कैसे जलायी जाती है?" जसवंत ने पूछा।

"नहीं। मैंने कभी नहीं जलायी।" नवीन ने कहा।

"तो आज रात मैं तुम्हें पहला पाठ दूंगा। बालचर का टेस्ट पास करने के लिए दो तीलियों से ही आग जलानी पड़ती है। लेकिन पहले हमें लकड़ी को काटना होगा। इसीलिए मैं अपने साथ कुल्हाड़ी लाया हूं। "जसवंत ने

समझाया।

"हमें आग जलाते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए," कपिल ने कहा।

"जंगल की खतरनाक आग आमतौर पर ऐसे ही लापरवाही से फेंकी गई माचिस की तीलियों या पिकनिक के लिए सुलगाई आग को ठीक से न बुझाने से फैलती है।"

"आप चिंता न करें, हम पूरा ख्याल रखेंगे," नवीन ने कहा।

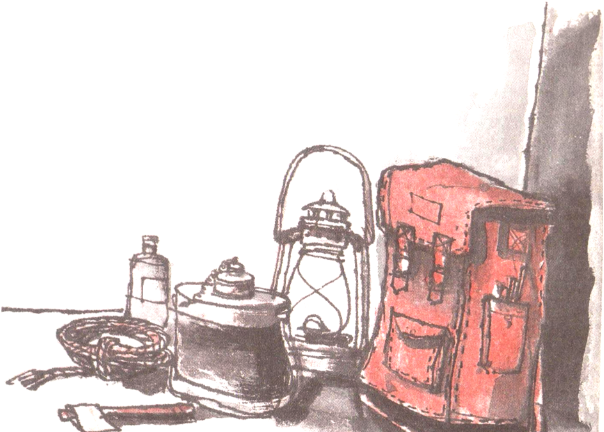

गड़रिये की झोपड़ी

सूर्य बादलों के साथ लुका-छिपी खेल रहा था। आकाश पहले संतरी रंग का हुआ, फिर सुनहरी और शाम घिर आयी।

तीनों लड़के गड़रिये की झोपड़ी (शैफर्ड हट) की ओर चल पड़े। रास्ता जंगल के बीच में पथरीली ऊंचाई के रूप में था। रास्ता बहुत ज्यादा लंबा नहीं था और नवीन ने देखा कि वे जल्दी ही पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गये हैं। वह इस पठार को देखकर चकित रह गया जिसके एक ओर थोड़े से पेड़ थे और आसपास कहीं-कहीं झाड़ियां। गड़रिये की झोपड़ी पठार के बीचों-बीच स्थित थी। यह एक कमरे वाली छोटी-सी लकड़ी के गट्ठों से बनी हुई झोपड़ी थी। फर्श मिट्टी के पलस्तर का बना हुआ था।

"कुछ भेड़ें यहां रही हैं," कपिल ने कहा। "तभी यह इतनी गंदी है।"

"एक बुहारी बनाओ और जगह को बुहार दो। मैं आग जलाने के लिए लकड़िया लेने जा रहा हूं। हमें जल्दी करनी चाहिए। सूर्य तेजी से डूब रहा है।" इतना कहकर जसवंत ने अपनी रस्सी और कुल्हाड़ी उठायी और बाहर भाग गया।

कपिल और नवीन ने झाड़ियों की फुनगियां तोड़ीं और उन्हें एक झाड़ू के रूप में बांध लिया। उन्होंने झोपड़ी को बुहारा और नवीन ने तीनों बिस्तर लगाने शुरू कर दिये। कपिल तीन समतल पत्थर खोज लाया। तीनों पत्थरों को जोड़कर आग जलाने की जगह बना दी।

जसवंत जलाने की लकड़ियों का एक छोटा-सा गट्ठर और बहुत से सूखे शंकु-फल ले आया। उसने झोपड़ी के सामने थोड़ी-सी जगह की घास काटकर जगह साफ कर दी।

"नवीन, मैं अलाव जलाने जा रहा हूं। तुम आकर इसका ध्यान रखो," उसने पुकारा।

नवीन ने देखा कि जसवंत ने पहले सूखे हुए शंकु-फलों को चीरा, फिर उन्हें झाड़ियों की फुनगियों के साथ गोलाई में जोड़ दिया। लकड़ी के बड़े टुकड़े उसने सबसे ऊपर जोड़े और उस ढेर ने एक झोपड़ी का रूप ले लिया।

"शंकु-फल और फुनगियों को आग जल्दी पकड़ती है। इनसे जल्दी आग जलती है, पर ये शीघ्र ही जलकर समाप्त हो जाते हैं। लकड़ी के मोटे कुंदे

आग देर से पकड़ते हैं, पर ये बहुत देर तक जलते रहते हैं।" जसवंत ने पूछा, "रात के लिए हम क्या पकायें?"

"हमारे पास कुछ परांठे तो हैं ही," कपिल ने कहा। "गर्म राख में आलुओं को न भून लिया जाय? बड़े स्वादिष्ट बनते हैं।"

"बहुत अच्छे।" नवीन बोला। वह खाना पकानेवाला एक बर्तन लेता आया था। कपिल ने पत्थरों के नीचे एक गड्ढा खोदा और अलाव में से कुछ जलती हुई लकड़ियों को उसमें रख दिया। नवीन ने खाना बनाना शुरू कर दिया।

थोड़ी देर बाद जसवंत वाला अलाव धीरे-धीरे बुझने लगा। उसने तीन बड़े आलू गर्म राख में दबा दिये।

"आलुओं का क्या हो रहा है?" कपिल ने कहा,"खुशबू तो अच्छी आ रही है।"

तीनों लड़कों के पास टीन की प्लेटें थीं। उन्होंने अपना खाना खुद परोसा। गरम भुने हुए आलू स्वादिष्ट थे। खाना खाने के बाद लड़कों ने राख से बर्तन साफ किये।

नवीन यह देखकर चकित रह गया कि जसवंत ने अपनी जेब से 'माउथ आरगन' निकाला और बजाना शुरू कर दिया। उसने पहाड़ी लोगों के एक विदाई गीत की धुन बजायी। तब उसने कुछ बालचर-गीत भी बजाये। उसके बाद कुछ नई फिल्मी धुनें भी बजाईं। जब नवीन और कपिल को उन गीतों के बोल याद आ जाते तो वे भी साथ-साथ गाने लगते।

"नवीन को नींद आ रही है," कपिल ने कहा।

"चलो अब हम तीनों सो जायें," जसवंत बोला। "आओ पहले अलाव को बुझा दें।"

नवीन झोपड़ी के अंदर आने के लिए बढ़ा। दरवाजे के पास वह रुका, मुंह से उबासी लेने का स्वर निकला—"आऽऽऽ।" तभी एक पतली और लंबी छाया उस पर कूदी और वह पीछे की तरफ गिर गया। कपिल के पास से छाया दौड़ी तो वह चिल्ला उठा, "देखो।" तब वह छाया-सा लगने वाला

से छाया दौड़ी तो वह चिल्ला उठा, "देखो।" तब वह छाया-सा लगने वाला जीव जसवंत को पीछे धकेलता हुआ पठार की ओर भागता हुआ दूसरी ओर निकल गया।

"क्या चीज थी?"

"तेंदुआ!" नवीन चिल्लाया।

"लोमड़ी!" कपिल चीखा।

"मेरा ख्याल है, वह सियार था," जसवंत बोला। तीनों को हंसी आ गयी। तभी जंगल की ओर से सियार हुआंक उठा।

"शुभरात्रि, मित्र," कपिल कह उठा। "तुमने तो हमें डरा ही दिया था।"

"सियार खाने के बचे खुचे टुकड़ों की तलाश में तभी अंदर गया होगा जब हम गा-बजा रहे थे," जसवंत ने उन्हें बिस्तरों में घुसते हुए देखकर कहा। "मजे से सो जाओ।" उत्तर नहीं मिला। नवीन और कपिल सो चुके थे।

आधी रात की घटना

करीब आधी रात बीती होगी। नवीन एकाएक चौंका और उसकी नींद टूट गयी। वह क्यों जाग गया? झोपड़ी में घुप अंधेरा था। हर ओर खामोशी थी। कपिल और जसवंत गहरी नींद में थे।

नवीन उठकर बैठ गया। कहीं से भी कोई आवाज नहीं सुनायी दी, कोई हिला-डुला नहीं। "कोई बुरा सपना देखा होगा," उसने सोचा।

वह दुबारा लेटने को था कि एक क्षीण-सी लेकिन साफ चीख फिर सुनायी दी, "आऽऽऽ ओऽऽऽ!" पतला-सा तीखा स्वर था। यह किसी व्यक्ति की आवाज है या किसी जानवर की चीत्कार, वह निर्णय नहीं कर पाया।

"जसवंत! कपिल! जरा जागो। कोई पुकार रहा है," नवीन ने जल्दी से कहा।

"क्या है?" जसवंत एकदम जाग गया। "नवीन, तुम इस ठंड में क्यों खड़े हो। जर्सी पहन लो।"

"सुनो, जसवंत!"

"आऽऽऽ ओऽऽऽ।" चीख ऊंची उठी। स्वर में व्याकुलता थी।

"रुको, पहले मुझे लालटेन जला लेने दो," जसवंत ने लालटेन जला दी।

"क्या बात है?" कपिल ने सोते-सोते पूछा।

"कोई सहायता के लिए पुकार रहा है," जसवंत बोला। "गर्म कपड़े पहन लो। टार्च, रस्सी, कुल्हाड़ी!" कहकर जसवंत ने चीजें इकट्ठा करनी शुरू कर दीं। कपिल भी कूदकर बिस्तर से निकला, "मेरे पास भी एक टार्च है। नवीन, फर्स्ट-एड किट मेरे झोले में है।"

"आऽऽऽ ओऽऽऽ!" चीख फिर सुनायी दी।

कुछ ही क्षणों में वे तीनों चल पड़े। नवीन के हाथ में लालटेन थी।

"ठहरो! पहले दिशा की पहचान कर लें," जसवंत ने रोका।

"आऽऽऽ ओऽऽऽ!" चीख फिर सुनायी दी। चीख पठार के दूसरे किनारे की ओर से आ रही थी। वे उसी ओर बढ़ने लगे। चांद चमक रहा था और रास्ता साफ दिखाई दे रहा था। वे पहाड़ी के किनारे पर पहुंच चुके थे। यहां आकर सपाट मैदान के बाद एकदम ढलान थी। पठार के किनारे पर थोड़ी झाड़ियां उग आयी थीं। वहां कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था।

"हो! कौन है वहां? तुम कहां हो?" जसवंत ने पुकारा।

"आ. . . ओ. . .! यहां नीचे हूं," एक स्वर चिल्ला उठा। जसवंत पेट के बल लेटा और रेंगता हुआ पहाड़ी के बिल्कुल किनारे पर टार्च जलायी। कपिल भी उसके बगल में लेट गया और नीचे की ओर जलती टार्च दिखाने लगा।

"देखो, जसवंत। वहां, उस कगार पर। कोई लड़का है," कपिल ने कहा।

टार्च की रोशनी सीधी चट्टानी पत्थर पर पड़ी जो चोटी से लगभग 15 फुट नीचे पहाड़ी में से बाहर निकला हुआ था। एक गड़रिया लड़का चट्टान के साथ दुबका खड़ा था। उसके हाथों में कोई चीज थी।

"थोड़ा ठहरो, डरना मत," जसवंत बोला। "हम तुम्हें अभी ऊपर ले आयेंगे।"

"तुम्हारे पास क्या है?' कपिल ने पूछा।

"एक भेड़ है। मेरी मदद करो।" लड़का रोने लगा।

जसवंत ने रस्सी खोल दी। "लड़के!" उसने पुकारा, "क्या नीचे एक और आदमी के लिए जगह है?"

"बहुत थोड़ी," लड़के ने उत्तर दिया।

"जसवंत, मुझे नीचे जाने दो। तुम्हारे लिए रस्सी को पकड़े रखना भी मुश्किल नहीं होगा," कपिल आगे बढ़ा।

"ठीक है। मैं तुम्हारी कमर में रस्सी बांध देता हूं। नवीन तुम लालटेन को किनारे पर लेकर खड़े हो जाओ। कपिल याद रखो, रस्सी को दोनों हाथों से पकड़े रहना और पहाड़ी पर पांव ठीक से टिकाना। मैं रस्सी को धीरे-धीरे छोड़ता जाऊंगा।"

"तुम अपने जूते उतार लो तो ज्यादा अच्छा है," नवीन ने सलाह दी।

हवा में थोड़ी तेजी थी और चांद एक बार फिर बादलों की ओट में चला गया था। कपिल ने पहाड़ी का किनारा पकड़ा और नीचे उतरने लगा। रास्ते में कहीं पत्थर निकले हुए थे, कहीं झाड़ियां थीं, जहां वह अपने पांव टिका सकता था। उसने मजबूती से रस्सी को पकड़ा और जसवंत पर पूरा विश्वास रखते हुए कहा, "ठीक। मैं उतर सकता हूं।" जसवंत ने धीरे-धीरे रस्सी छोड़नी शुरू कर दी।

"ठीक है?" जसवंत ने पूछा।

"तीन फुट और," उसने उत्तर दिया। "ठीक है, बस! मैं पहुंच गया हूं।"

कपिल ने देखा, वह लड़का लगभग 10 वर्ष का था। "तुम व्यास जी के नौकर जयदेव के बेटे हो?" कपिल ने पूछा।

"हां। मेरा नाम धानू है। अगर यह भेड़ खो जाती तो मेरा बापू मुझे पीटता। मैं कई घंटों से यहां खड़ा हूं।" लड़का रुआंसा हो गया।

"रोओ नहीं, धानू। अब तुम्हें और तुम्हारी भेड़ को कोई खतरा नहीं है।" कपिल ने स्नेह के साथ कहा। लेकिन थोड़ी ही देर बाद उसने पुकारा, "जसवंत इसे तुम ऊपर नहीं खींच सकोगे। इसकी बांह जख्मी हो गयी है।"

"क्या? टूट गयी?"

"शायद कंधा टूट गया है।"

"इसे छूना नहीं। थोड़ा रुको, मुझे सोचने दो।" तब उसने कहा, "ध्यान से सुनो कपिल। भेड़ क्या बहुत बड़ी है?"

"नहीं, अभी बच्चा ही है।"

"तुम्हारे पास अपनी डोरी है न।"

"हां।"

"और तुम्हारा छोटा चाकू?"

"वह भी है।"

"क्या तुम भेड़ की पिछली दोनों टांगे बांध सकते हो और अगली भी?"

"कोशिश करता हूं," कपिल ने कहा। उसने अपना छोटा चाकू निकाला और डोरी को नापने लगा।

भेड़ डरी हुई थी, इसलिए उसने उछल-कूद नहीं की। दूसरे, धानू भी उसे पकड़े रहा।

"बांध दी है," कपिल ने पुकारकर कहा।

"अब भेड़ को अपने कंधों पर उसी तरह लाद लो जैसे गड़रिये लादते हैं," जसवंत ने उसे सुझाव दिया।

भेड़ का वजन कुछ ज्यादा था और कपिल को उसे कंधों पर लादना वड़ा मुश्किल दिखाई दे रहा था।

"अब, ध्यान से सुनो। तुम्हारे पास थोड़ी और डोरी या स्कार्फ है? तुम्हें इसकी अगली-पिछली टांगों को अपनी छाती पर बांधना होगा। कसकर।"

"धानू के पास छोटी-सी पगड़ी है," कपिल ने कहा।

"उसे कहो कि पगड़ी दे दे।" कपिल ने धानू की पगड़ी ले ली। पहले भेड़ की पिछली टांगों को कसकर बांधा, फिर अगली टांगों को। ऐसा लगता था, जैसे भेड़ को उसने मफलर की तरह गले में लपेटा हुआ है।

"तैयार हूं," उसने पुकारा।

"अब तुम रस्सी को पकड़ लो। मैं तुम्हें ऊपर खींच लूंगा। धीरे। नीचे मत देखो," जसवंत ने चेतावनी दी। नीचे जाने की अपेक्षा ऊपर आना कठिन था। जसवंत के हाथ रस्सी खींचने के कारण छिल गये थे।

आखिर जब कपिल के सिर का कुछ भाग किनारे से ऊपर दिखाई दिया

तो नवीन ने राहत की सांस ली। उसने भी जल्दी से रस्सी खींची और कपिल ऊपर आ गया। कपिल का सांस उखड़ गया था। जसवंत ने उसके कंधों पर से भेड़ उतार ली।

"भगवान का शुक्र है!" कपिल ने कहा, "और थोड़ी देर में तो यह शैतान भेड़ मेरा गला ही घोंट देती।" उसने अपनी गर्दन को हाथों से रगड़ा। "लेकिन अब धानू को ऊपर कैसे लाया जाये, जसवंत?"

"देखो," जसवंत ने कहा। "रस्सी का एक सिरा मैंने इस पेड़ के तने से बांध दिया है। यह बड़ा मजबूत है और गांठ भी नहीं खुल सकती। धानू," उसने पुकारा। "मैं नीचे रस्सी लटका रहा हूं। जब इसका सिरा तुम तक पहुंच जाये तो पकड़ लेना।"

"ठीक है," लड़के ने उत्तर दिया। जसवंत ने रस्सी छोड़नी शुरू कर दी। "मैंने रस्सी को पकड़ लिया है," धानू ने कहा।

"ठीक है अब रस्सी को छोड़ दो। मैं तुम्हें लेने नीचे आ रहा हूं। कपिल, मुझे धानू की पगड़ी पकड़ा दो।"

जसवंत ने अपने जूते उतार दिये और किनारे से नीचे जाने लगा। हाथ में रस्सी थी जिसे वह थोड़ा-थोड़ा छोड़ते हुए कदम-कदम नीचे उतर रहा था।

कपिल और नवीन दोनों भेड़ और टार्च को पकड़े सांस रोके खड़े थे।

अचानक जसवंत के पैर की पकड़ छूट गयी और वह रस्सी के सहारे हवा में झूलने लगा। रस्सी तन गयी।

"नवीन भेड़ को तुम पकड़ो।" कपिल ने कहा। वह दोनों हाथों से रस्सी को खींच रहा था, ताकि पेड़ के तने पर अधिक जोर ना पड़े। जसवंत पहाड़ की ओर झूला और उसने अपना पैर जमा लिया। वह फिर से नीचे उतरने लगा।

कुछ ही क्षणों में जसवंत नीचे धानू के पास पहुंच गया।

"तुम बहुत साहसी हो धानू," उसने उस लड़के से कहा। "अब भी तुम्हें साहस दिखाना होगा। तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ। अपनी ठीक वाली बांह मेरी कमर के आसपास जकड़ लो। ठीक है ऐसे। अब अपनी टांगों को मेरे चारों तरफ जकड़ लो। कसकर। ठीक है, ठीक है। अब मैं तुम्हें अपने साथ बांधता हूं।" जसवंत ने पगड़ी से धानू और अपने को बांध लिया।

"इससे तुम्हें पीड़ा तो होगी," जसवंत ने चेतावनी दी। "लेकिन तुम मुझे छोड़ना नहीं। समझे!"

"मैं पकड़े रहूंगा," थके-मांदे लड़के ने वादा किया।

जसवंत ने ऊपर चढ़ना शुरू कर दिया। वह मजबूती से एक पांव जमाता और रस्सी पकड़कर ऊपर हो जाता। लड़के को कमर पर बांधकर कदम-कदम ऊपर चढ़ना वैसे कोई आसान काम नहीं था। धानू चाहे हल्के वजन का छोटा-सा लड़का था, लेकिन छोटी आयु के बालचर के लिए फिर भी यह कार्य कठिन था। जसवंत को मालूम था कि इस समय धानू को बहुत पीड़ा हो रही होगी। लेकिन उस बेचारे ने चूं भी नहीं की।

धीरे-धीरे जसवंत ऊपर चढ़ने लगा। आखिर वह ऊपर किनारे तक पहुंच गया। "लड़को आओ। उफ! हा!!" उसने पुकारा। सबने मिलकर भरसक प्रयास किया। जसवंत ऊपर आ गया, और थककर पेट के बल गिर पड़ा। नवीन

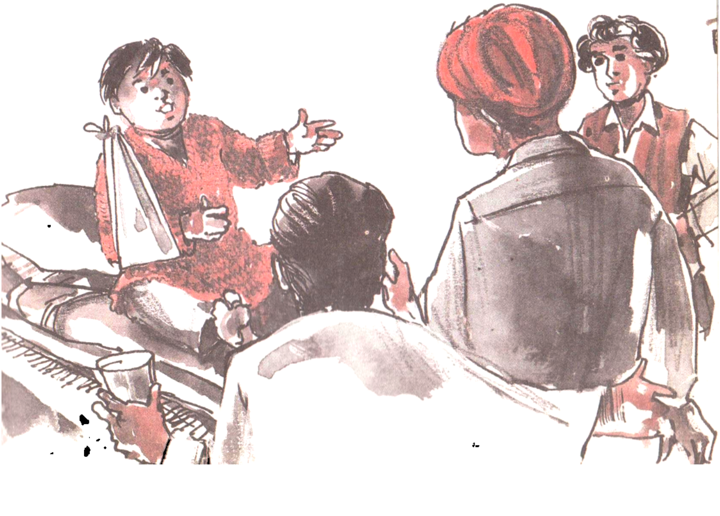

अब सभी अपनी झोपड़ी की ओर चलने लगे। प्रातः के पक्षियों ने चहचहाना शुरू कर दिया था। जसवंत ने धानू को झोपड़ी के अंदर बिठाया और नवीन से बोला, "इसे भूख लग रही होगी।"

"नवीन ने गर्म दूध का एक गिलास भरकर धानू को पकड़ा दिया।

जसवंत ने अपने झोले में से पूरी बांह का एक स्वैटर निकाला। धानू ने केवल एक सूती कमीज पहनी हुई थी। उसका पाजामा फट चुका था। जसवंत ने पहले धानू की बांह को गलपट्टी में डाला, फिर उसे स्वैटर पहना दिया। स्वैटर इतना बड़ा था कि वह धानू के घुटनों तक आ गया। भेड़ मिमियाने लगी। कपिल ने उसकी टांगें खोल दीं और नवीन ने बचा हुआ दूध उसके सामने रख दिया।

धानू ने दूध पिया और तीनों की ओर देखकर मुस्कराया। तब वह वहीं कपिल के बिस्तर पर गहरी नींद सो गया।

पक्षी अब जाग गये थे और सभी इस तरह चहचहाने लगे जैसे समवेत स्वर में कोई खुशी का गीत गा रहे हों। यह एक सुंदर दिन का शुभ आरंभ था।

घर वापसी

दो-एक घंटे बाद उन्होंने धानू को जगाया ओर वे सब चल पड़े। रास्ते में धानू ने अपनी आप बीती कह सुनाई।

"मैं नत्थूराम गड़रिये के साथ भेड़ें चराने आया था। जब हम वापस फार्म पहुंचे तो मैंने देखा यह भेड़ उनमें नहीं है। पहले भी एक भेड़ खो गयी थी और व्यास जी बड़ा गुस्सा हुए थे। मैंने नत्थूराम को कुछ नहीं कहा और इस भेड़ को ढूंढ़ने वापस दौड़ आया। मुझे इसकी आवाज सुनायी दी। वह उस चट्टान पर उतर गयी थी, लेकिन वापस चढ़ नहीं पा रही थी।"

"लेकिन तुम उस सीधी पहाड़ी से नीचे उतरे कैसे?" कपिल ने पूछा।

"पता नहीं कैसे उतर गया। मैं बहुत डरा हुआ था कि बापू मुझे मारेगा। मुझे भेड़ वापस ले जानी ही थी। मैं नीचे तो किसी तरह उतर गया, लेकिन ऊपर नहीं चढ़ पाया। तभी अंधेरा घिर आया और मैं डर गया।"

उन्होंने देखा कि जयदेव और नत्थू बल्लियां हाथों में पकड़े पहाड़ी पर चढ़ रहे हैं। जब उन्होंने इस दल को आते हुए देखा तो कह उठे, "शुक्र है भगवान का, तुमने इस लड़के को ढूंढ़ लिया। हम इतनी चिंता में थे।"

धानू बोला, "बापू, इन्होंने मेरी जान बचायी है। भेड़ को भी इन्होंने ही बचाया है।"

"तुम शैतान. . .," जयदेव कुछ कहने को हुआ, लेकिन जसवंत ने टोक दिया, "इसे झिड़को नहीं। तुम्हारा बेटा बहुत बहादुर है। इसकी बांह पर चोट लगी हुई है। हमें इसे किसी डाक्टर के पास ले जाना चाहिए।"

फार्म पर व्यास जी बेसब्री से सूचना की प्रतीक्षा में थे। उन्होंने धानू को

उसी समय शिमला के अस्पताल भिजवाने का भी प्रबंध कर दिया।

"तुम बालचर कितने अच्छे हो। तुम्हारे बालचर प्रशिक्षण ने आज एक लड़के का जीवन बचा लिया है," व्यास जी कहते गये। "कपिल, जब तुम्हारे चाचाजी सुनेंगे तो उन्हें भी तुम सब पर बहुत गर्व होगा। थोड़ी देर बाद वे तारा फार्म के लिए चल पड़े।

सलाम

शाम को सारा परिवार लॉन में एकत्र हो गया। दोनों जुड़वां बच्चे नवीन को दोहरी गांठ और साधारण गांठ का अंतर समझा रहे थे। जसवंत और कपिल दोनों रेखा के बचाव संबंधी प्रश्नों का उत्तर देने के साथ-साथ उस घटना के बारे में भी बता रहे थे।

"मुझे तो इस सारी कहानी में वह अंश बहुत अच्छा लगा जिसमें सियार नवीन पर छलांग लगाता है," रेखा हंसी।

"उस समय तुम नवीन का चेहरा तो देखती," कपिल ने कहा।

"देखो नवीन," विजय चाचा बोले, "छुट्टियों ने तुम्हें बता ही दिया होगा कि बालचर होना कितना अच्छा है। तुमने देख ही लिया कि बालचर कर्म कितनी अधिक चीजें सिखाता है जो जीवन में काम आती हैं।"

"मुझे भी यही लगता है," नवीन ने कहा। "मैं अब पक्षियों और पेड़ों के बारे में जानने लगा हूं. . .।"

"...और पशुओं के बारे में," रानी बीच में बोली। "और जंगली फूलों के बारे में भी।"

"बिल्कुल ठीक है, रानी," नवीन ने कहा। "सच अपने आसपास के संसार को अब मैं दूसरी आंखों से देखने लगा हूं।"

"और अपने ऊपर आकाश को भी तो," कपिल ने कहा।

"मैंने देखा कि जसवंत कई तरह की गांठें बांधना जानता है। पेड़ के तने पर बंधने वाली गांठ और कपिल की कमर में बंधने वाली गांठ में कितना अंतर था। कपिल को फर्स्ट-एड किट का इस्तेमाल करते हुए भी मैंने देखा था। बढ़ई का काम, आग जलाना, लकड़ी काटना, यह सब काम आने ही चाहिए।"

"और प्लेटें धोना?" रेखा ने पूछा।

"खाना बनाने, आग बुझाने या खो गये गड़रिये को बचाने के बारे में तो कहना ही क्या। ओह!"

"मुझे याद आया," विजय चाचा ने कहा। "धानू अब पहले से बहुत अच्छा है। उसकी बांह पर पलस्तर चढ़ा दिया गया है। हड्डी को ज्यादा हानि नहीं पहुंची और वह जल्दी ही ठीक हो जायेगा। धानू ने तुम सबके लिए प्यार और धन्यवाद भेजा है।"

"मुझे विश्वास है नवीन कि इस बार तुम हमारे बालचर दल में अवश्य शामिल होगे," कपिल ने कहा।

"वे मुझे अपने दल में ले लेंगे?" नवीन ने पूछा।

"तुमने बहुत कुछ सीख लिया है," विजय चाचा बोले। "अब तो तुम बहुत अच्छे बालचर बन सकते हो।"

"आशा है कि मैं अगले वर्ष रोवर टेस्ट भी पास कर लूंगा, तब मैं 17 का हो जाऊंगा," जसवंत ने कहा।

तभी रेखा घर के अंदर भाग गयी। थोड़ी देर बाद लौटी तो उसके हाथ में बड़ा-सा बर्तन था। "मुझे इस बार पाक-शास्त्र का बैज जरूर मिलेगा। देखो, मैंने तुम्हारे लिए क्या बनाया है।" और उसने बर्तन का ढक्कन उठा दिया। बर्तन में गर्म हलुआ था, उस पर बादामों से बने अक्षरों में लिखा था:

"जसवंत, कपिल, नवीन
तीनों बालचरों को सलाम"

सरस्वती आर्ट प्रिंटर्स, नयी अनाज मंडी, दिल्ली-110006 द्वारा मुद्रित।

रु. 14.00 ISBN 81-237-1090-9

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया